Topic 23 – भ्वादिगण अजन्त धातु

कृ-सृ-भृ-वृ-स्तु-द्रु-स्रु-श्रुवो लिटि।
क्रादिभ्य एव लिट इण् न स्यात्, अन्यस्मादनिटोऽपि स्यात्।

अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम्।
उपदेशेऽजन्तो यो धातुस्तासौ नित्यानिट्, ततः परस्य थल इण् न।

उपदेशेऽत्वतः।
उपदेशेऽकारवतस्तासौ नित्यानिटः परस्य थल इण् न स्यात्।

ऋतो भारद्वाजस्य।
तासौ नित्यानिट ऋदन्तादेव थलो नेट्, भारद्वाजस्य मतेन। तेन अन्यस्य स्यादेव। अयमत्र संग्रहः –
अजन्तोऽकारवान् वा यस्तास्यनिट् थलि वेडयम्। ऋदन्त ईदृङ् नित्यानिट्, क्राद्यन्यो लिटि सेड् भवेत्॥

चिक्षयिथ, चिक्षेथ। चिक्षियथुः। चिक्षिय। ~~चिक्षि~~ चिक्षाय, चिक्षय। चिक्षियिव, चिक्षियिम। क्षेता। क्षेष्यति। क्षयतु। अक्षयत्। क्षयेत्।

अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः।
अजन्ताङ्गस्य दीर्घो यादौ प्रत्यये, न तु कृत्सार्वधातुकयोः। क्षीयात्।

भारद्वाज के मत से जो ऋकारान्त धातु 'तास्' प्रत्यय परे होने पर नित्य अनिट् हो, उसके पश्चात् थल् को इट् आगम नहीं होता। पूर्ववर्ती दो सूत्रों से ही ऋकारान्त धातुओं से परे थल् को इट् निषेध सिद्ध हो जाता है। अतः इस सूत्र का आरम्भ नियमार्थ है।

~~भारद्वाज~~ भारद्वाज के मत से केवल ऋकारान्त धातुओं
के ही परे थल को इट् आगम नहीं होता। ऋकारान्त
भिन्न अन्य अजन्त तथा हलन्त धातुओं को इट् आगम
हो जाता है। किन्तु पाणिनी सभी अजन्त और हलन्तों
अकारवान् धातुओं को इट् निषेध करते हैं। इस मतभेद
के फलस्वरूप ऋकार-भिन्न अजन्त और हलन्त
अकारवान् धातुओं से परे थल को विकल्प से इट्
का आगम होता है। ऋकारान्त धातु को पाणिनि भी
निषेध करते हैं। अतः दोनों के एकमत होने से ऋकारान्त
धातुओं से परे थल को इट् आगम नहीं हो सकता।
उदाहरण के लिए। श्रि। धातु अनिट् और अजन्त है।
अतः उससे परे थल को विकल्प से इट् होता है
इट् होने पर। शिश्रयिथ। अभाव पक्ष में। शिश्रेथ।
रूप बनता है।

सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु।

इगन्ताङ्गस्य वृद्धिः स्यात् परस्मैपदे सिचि। अश्रैषीत्।
अश्रैष्यत्। तप सन्तापे।९४। तपति। तताप, तेपतुः।
तेपुः। तेपिथ, ततप्थ। तप्ता। तप्स्यति। तपतु।
अतपत्। तपेत्। तप्यात्। अताप्सीत्। अताप्ताम्।
अतप्स्यत्। क्रमु पादविक्षेपे।।९५।